तुलसी की व्यावसायिक खेती एवं उसकी औषधीय उपयोगिता

नागेन्द्र कुमार, राहुल कुमार* एवं अमृता कुमारी*
कीट विज्ञान विभाग, राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (समस्तीपुर)

प्राचीन काल से लेकर आज तक तथा समस्त धार्मिक ग्रन्थों में तुलसी का वर्णन मिलता है। हिन्दू धर्म के अनुसार सभी घरों में तुलसी का एक पौधा होना अनिवार्य है, तथा इसकी पूजा की जाती है। तुलसी लेमिएसी कुल का वार्षिक पौधा है। इसकी लम्बाई 30–60 से.मी. तक होती है। इसकी शाखाएं काफी सघन होती है। इसकी तना एवं शाखाएं बैगनी रंग की होती हैं। यह समस्त भारतवर्ष में पाई जाती है। इसके समस्त भाग का अपना अलग–अलग उपयोग होता है। तुलसी की उपयोगिता उस समय और भी बढ़ जाती है, जब वातावरण प्रदूषण की चर्चा होती है। तुलसी का पौधा वातावरण की शुद्धता को बढ़ाने में तथा ऑक्सीजन की मात्रा को संतुलित करने के साथ–साथ अन्य उद्योगों में जैसे सौन्दर्य प्रसाधन की वस्तुओं के निर्माण में, खाद्य पदार्थ में तथा सुगंधित द्रव्य आदि के निर्माण में उपयोगी है।

भूमि : तुलसी का पौधा सभी प्रकार की मृदा में अच्छी प्रकार होता है। लेकिन बलुई दोमट मिट्टी काफी अनुकूल मानी जाती हैं। इस प्रकार की मिट्टी में पौधा की वृद्धि अच्छी होती है, तथा साथ–साथ पौधा को यदि उखाड़ा जाये तो जड़ को हानि नहीं होती है।

जलवायु : तुलसी का पौधा समस्त जलवायु के लिए अनुकूल होता है। परन्तु उष्णकटिबंधीय एवं उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु काफी अच्छी मानी जाती है। लम्बे समय तक उच्च तापमान यदि मिलता रहे तो पौधों की वृद्धि अच्छी होती है साथ ही साथ तेल उत्पादन भी अच्छा होता है।

मुख्य रूप से तुलसी की तीन प्रजातियों की खेती होती है।

(क) कृष्णा तुलसी : पौधा गहरे बैगनी रंग के तना वाला होता है। पत्तियां छोटी होती है तथा गहरे हरे रंग की होती हैं।

(ख) विष्णु तुलसी : विष्णु तुलसी को लक्ष्मी तुलसी के नाम से भी जाना जाता है। पौधा हल्के हरे रंग का होता है। पत्तियाँ हल्की हरी होती है।

(ग) वीणा तुलसी : यह तुलसी की जंगली प्रजाति है।

खेत की तैयारी : पौधे रोपने से पूर्व 2–3 गहरी जुताई करनी चाहिए तथा अन्तिम जुताई के समय सड़ी गोबर की खाद कम्पोस्ट 12–15 टन प्रति हेक्टयर मिलाकर पाटा लगा देना चाहिए।

बीज दर एवं नर्सरी : बीज की मात्रा 300–320 ग्राम प्रति हेक्टेयर। इसकी नर्सरी फरवरी महीने के तीसरे सप्ताह में डाली जाती है तथा पौधा रोपण का कार्य अप्रैल महीने में किया जाता है। इसके बीज को 2 से. मी. तक गहराई तक ही नर्सरी में डालना चाहिए। इनका रोपण 6 सप्ताह बाद आसानी से किया जा सकता है जब पौधा में 4–5 पत्तियां आ जाती हैं।

उर्वरक : पौधा रोपण से पूर्व अन्तिम जुताई के समय 15 टन प्रति हेक्टेयर की दर से हरी खाद, वर्मीकम्पोस्ट या सड़ी गोबर की खाद डालनी चाहिए। इसके अतिरिक्त नाइट्रोजन, फॉस्फोरस एवं पोटाश की पूर्ति के लिए क्रमशः 120:60:60 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर डालना चाहिए।

* पादप रोग विभाग, राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (समस्तीपुर)

सिंचाई : गर्मी के मौसम में 3 सिंचाई प्रति महीने आवश्यक हो जाती हैं। वर्षा के मौसम में सिंचाई की विशेष आवश्यकता नहीं पड़ती है। लेकिन 12–15 सिंचाई पूरे साल भर में देना आवश्यक है।

फसल सुरक्षा : तुलसी में लीफ रोलर नामक कीट का प्रकोप हाता है। उसके नियंत्रण के लिए 0.2 प्रतिशत मालाथियॉन का छिड़काव करना चाहिए। इसके अतिरिक्त पाउड्री मिल्डियू तथा पर्ण गलन रोग का प्रभाव होता है जिसके प्रबंधन के लिए 0.1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें।

उपज : तुलसी की उपज काफी अच्छी होती है। यदि इसकी कटाई चमकीली धूप में हो तो ज्यादा अच्छी मानी जाती है तथा इसमें तेल की मात्रा बढ़ जाती है। एक औसत अनुमान के अनुसार 10000–15000 कि.ग्रा. अच्छी पत्तियों की प्राप्ति प्रति हेक्टेयर हो सकती है जिससे 15–20 लीटर तेल प्राप्त हो सकता है।

तुलसी की औषधीय उपयोगिता : तुलसी की उपयोगिता प्राचीन काल से ही आयुर्वेद जगत में विद्यमान है। इसकी पत्तियां, तना, जड़, तथा फूल सभी का महत्व है। यह अपने औषधीय गुण के कारण काफी प्रचलित है तथा इसकी औषधीय उपयोगिता काफी उच्च कोटि की मानी जाती है। इसके निम्नलिखित आवश्यक गुण धर्म है :

- तुलसी की पत्तियों से निर्मित टॉनिक तंत्रिका तंत्र को मजबूत करता है।
- सामान्य बुखार आने पर तुलसी की पत्ती का काढ़ा पीने से बुखार में राहत मिलती है।
- मौसमी बुखार या सर्द–गर्मी में तुलसी का काढ़ा काफी लाभदायक होता है।
- तुलसी की पत्ती में हल्का नमक मिलाकर काढ़ा बनाकर पीने से श्वास की बीमारी में राहत मिलती है।
- प्रतिदिन तुलसी का जूस जिसमें तुलसी पत्ती तथा शहद की मात्रा को मिलाकर सेवन किया जाए तो किडनी के स्टोन की समस्या समाप्त हो सकती है।
- तुलसी कोलेस्ट्रॉल भी कम करता है साथ ही साथ खून को साफ करने में भी सहायक है।
- तुलसी की पत्तियों को पीसकर शरीर पर लगाने से चर्म रोग में राहत मिलती है।
- तुलसी सामान्य कमजोरी तथा नपुंसकता के उपचार में भी उपयोगी है।

इसकी औषधीय गुणों को देखते हुए तथा इसकी उपयोगिता के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह भगवान का रूप है या भगवान के द्वारा दिया गया एक अनमोल वरदान।

❑ ❑ ❑

मिट्टी भविष्य की धरोहर है इसे सुरक्षित रखें ।